रविवार, 19-03-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

मन नूं भावन जी, मन नूं भावन जी रघुनाथ जी दे सांवले चरण।।

शिव ब्रह्मा तुहाडा ध्यान लगावे, महाबीर जी चरणां विच बाहवन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

कोई गावे कोई ताल बजावे, नारद जी बीन बजावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

कोई जंगलां विच धूनियां लावे, कोई सिर ते जटा वधावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

कोई जावे गंगा कोई जावे जमना, कोई चारे धाम पये धावन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

काम क्रोध नू भैणां परे हटाओ, रघुनाथ जी सांवले चरण दिखावन जी

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

मैं दासी तुहाडे चरणां दी प्यारी, ए चरण हृदय विच राहवन जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, मन नू भावन जी।।

हम मानते हैं कि सब सजन पूरी तरह से उत्साह में होंगे क्योंकि चैत्र का यज्ञ आ रहा है। इस सन्दर्भ में आत्मा-परमात्मा की एकरूपता जानने, समझने व मानने के लिए अपने हृदय में परमात्मा के प्रति निर्मल प्रेम के वातावरण का निर्माण करना है। यहाँ सजनों याद रखो कि जब तक हृदय का वातावरण निर्मल नहीं होता तब तक हम अपने यथार्थ को जान व पहचान नहीं सकते। इसी कमी की वजह से हम यथार्थपूर्ण जीवन जीने के काबिल नहीं बन सकते और सत्य-धर्म के रास्ते से भटक जाते हैं। जानो सजनों जब मनुष्य इस प्रकार सत्य

से अनिभिज्ञ हो जाता है तो उसके लिए इस ब्रह्ममय ब्रह्माण्ड में धर्म-संगत विचरना अति कठिन हो जाता है। परिणाम-स्वरूप सुकर्म छूट जाता है और बन्धनमान करने वाला असत्य-अधर्म हमारे स्वभाव के अन्तर्गत हो जाता है। असत्य-अधर्म से युक्त हमारा यह स्वाभाविक स्वरूप हमें पथभ्रष्ट कर देता है और हम अनचाहे जीवन की विपरीत दिशा में चलने लग जाते हैं। धीरे-धीरे फिर वही हमारा चलन बन जाता है और वही हमारा नित्य-प्रति का कर्म बन जाता है। तात्पर्य यह है कि हम अपने यथार्थ धर्म को इस तरह भूल जाते हैं कि बार-बार सत्संग में चेतावनियाँ दिए जाने पर भी हम असत्य-अधर्म का रास्ता छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि यह हमारे वश की बात ही नहीं रहती। सजनों यह परिस्थिति अत्यन्त कठिन और गम्भीर होती है जिसका परिणाम अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण होता है। सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते हमारे साथ ऐसा न हो इस हेतु अपने अन्दर जो परमात्मा के प्रति प्रेम है उसकी परख करो और जाँचो कि वह निर्मल प्रेम है या स्वार्थपर प्रेम है। जानो स्वार्थपर प्रेम क्षणभंगुर होता है जबकि निर्मल प्रेम सुरत के लिए अटल सुहागिन होने की व मानसिक स्थिति के सदा एकरस बने रहने की शुभ बात होती है। ऐसा होने पर जीवन जीने का मज़ा ही आ जाता है क्योंकि जब हमारी मानसिक स्थिति एकरस रहती है तो हमारे आत्मबल व आत्म-विश्वास का वर्द्धन होता है और हम सशक्त होकर कर्मठता से जीवन का कारज समयबद्ध सिद्ध करते हुए कर्त्तव्यपरायणता से सब कुछ सिद्ध कर पाते है और अन्त विजय को प्राप्त होते हैं।

सजनों इस चैत्र के यज्ञ पर हम सबका परिणाम यह अक्षय विजय ही हो इस हेतु हमें अब संसारी फुरनों की तरफ से अपना ध्यान हटाकर यानि ख़्याल को जगत की तरफ से आज़ाद कर दिन-रात अपनी सुरत को आधार स्वरूप परमात्मा के संग जोड़े रखना है। ऐसा करने से आत्मज्ञान प्राप्त होगा। आत्मज्ञान प्राप्त होगा तो हृदय प्रकाशित रहेगा और हम अपनी विवेकशक्ति का प्रयोग सहज और सरलता से करने में कामयाब हो जाएँगे। इस तरह हम निपुणता से केवल सत्य को धारण करने के काबिल बन जाएँगे। सत्य को धारण कर सत्यता के प्रतीक बन गये तो फिर धर्म हमारी पकड़ से नहीं छूट पाता और हम सत्यनिष्ठ इन्सान की तरह निष्पाप जीवन जीने के योग्य बन जाते हैं। सजनों आप सब भी इस वर्ष इस प्रयत्न में सफलता प्राप्त करने का भरसक यत्न करना और अपने संगी-साथियों को भी इस प्रयास में सम्मिलित करने का परोपकर कमाना। अब ध्यान से यज्ञ का निमन्त्रण सुनो-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

गरुड़ खड़ा घूकरां मारे, गरुड़ खड़ा घूकरां मारे।

हम भी चलेंगे तुम भी चलोगे, चलना है विच दरबारे।

शक्ति लक्ष्मी संग चलनगे, नाल चले बलधारे, गरुड़ खड़ा घूकरां मारे।।

दरबार में ही पहुँचदियां, ओथे कैसा लगा है दीवान।

पब्लिक हथ जोड़ करे चरण वन्दना, कोटि कोटि प्रणाम।

कैसी है सूरत आप दी सज रही महान।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

महाराज जी दे जन्म उत्ते सजनों सब कोई आवो।

कोई न राहवो घर विच बाकी, दयालु दा जन्म मनाओ।

दयालु है ओ सब दा सांझा, इन्सानों जपो ते पावो।।

कई सजन बेसमझी विच आ के कैसे बोलन ओ बोल।

घर विच खर्च बहुतेरा है, यज्ञ ते किस तरह जाऊँ।

ओ साजन जी पैसा नहीं साडे कोल।।

ओ है अजन्मा, सजनों जन्म कौन मनावे।

कौन है जे मनावन वाला, कौन जन्म ते आवे।

ओ है जे एक तो फिर कौन जन्म विच आवे।।

इन्तज़ाम घरां दे कर लवो सजनों, फिर एथे नहीं कहना जे।

श्री रामचन्द्र महाबीर जी दे जन्म ते सजनों आना जे।।

हनुमान जी श्रीराम दे जन्म ते सजनों आना है।

तीर्थ करदियां कई दिन लगन, पर असां तुआनूं चार दिन टिकाना है।।

दयालु जी दे जन्म उत्ते इन्सान जेहड़ा न आवेगा।

जेहड़ा न आवेगा सजन, फिर ओही पछोतावेगा।।

पैसियाँ दा फिकर मत करो, इस यज्ञ ते आना जरूरी है।

जगत रुस्से तां रुसन देवो, भगवान रुस्से तां नहीं टिकाना है।।

शब्दः-

बात किसे दी न करियो, न करियो किसे दी गल।

सतसंग में मत बोलियो, न मचाईयो हलचल।।

हम आशा करते हैं कि आप सबने (चाहे यहाँ बैठे हो या घरों में) ध्यानपूर्वक इस निमन्त्रण को सुना होगा। अब जो सुना है, परिवारों सहित वैसा सुनिश्चित करना भी आवश्यक है। आगे जानो कि इस कीर्तन के माध्यम से कुदरत कलुकालवासियों को चैत्र के यज्ञ की महानता और जीवन महत्त्व को बारीकी से समझाते हुए सबको आवाहन दे रही है कि चाहे आपकी, आपके परिवार की कोई भी परिस्थिति हो, आपको सपरिवार चार दिनों के लिए आना ही आना है। सजनों यह चार दिन का समय निकालना हर सजन के लिए कितना लाभकारी है, यह कुदरत ने सब बता दिया है। इसी के साथ यह भी बता दिया है कि जो भी इन्सान यह सब सुनने के पश्चात चैत्र के यज्ञ पर नहीं आता या फिर सिर्फ नाम गिनाने के लिए आता है, वह हानि में रहता है। यह सब जानने के पश्चात यह अब व्यक्तिगत रूप से आप पर निर्भर करता है कि आप अपने सजन हो या दुश्मन हो। अगर अपने सजन हो तो फिर सजन भाव कहता है कि जागृति में आकर अपने व सबके प्रति सजनता दिखाओ। इस तरह परमार्थ की तरफ से रुके हुओं को सद्मार्ग दिखाने का यानि कुरस्ते पड़े हुओं को सीधे रास्ते पर सार्थक भरसक यत्न करो। इस सन्दर्भ में सजनों यदि आप अपने, अपने बच्चों के, परिवारजनों के व अन्य सत्संगी सजनों के हितैषी हो और दिल से आपका नाता

इन सबसे जुड़ा हुआ है तो वे आपके आवाहन पर यज्ञ पर अवश्य आएँगे। आशय यह है कि आप ही उन्हें यज्ञ पर आने के प्रति उत्साहित कर सकते हो और आप ही उन्हें हतोत्साहित कर सकते हो यानि आप ही उन्हें बुला सकते हो और आप ही उन्हें रोक सकते हो। यहाँ सजनों अपनों को रोककर उनके साथ अन्याय किया तो फिर आपको पता ही है कि कुदरत का कानून कितना सख़्त है। इस बात को समझो और कुदरत से डरो। इस तरह कुदरत की वाणी को सुखप्रद समझकर अपने कार्य में शत-प्रति-शत सफलता प्राप्त करो। इस सन्दर्भ में कोई बहाना सुनने को न मिले यानि कोई आधे-अधूरे परिवार सहित यज्ञ पर आने की मूर्खता न करना। जानो यह मतलबपरस्ती है क्योंकि मै तो यज्ञ पर जाकर प्रेमरस पीकर पावनता का प्रतीक बनने की चेष्टा करना चाहता हूँ पर अपनों को व अन्यों को इस सुख से वंचित रखता हूँ। यह अपने आप में उनके प्रति वैर कमाना ही है। इस विषय में सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि यदि कोई यज्ञ पर आता है तो कोई नुक्सान नहीं होने वाला यानि जो भी कुदरत की आज्ञा का पालन करेगा, वह अन्त लाभ में ही रहेगा। इस लाभ को प्राप्त करने हेतु सजनों आपको चार दिन खुद को अफुर अवस्था में साधे रखना होगा। सो आपको आज से ही इस कार्य की सिद्धि करने का प्रयास आरम्भ कर देना है और इस हेतु हर उपलब्ध साधन का प्रयोग करना है। आज से ही सोये हुओं को जगाओ ताकि ऐसे सजनों ने जो दुष्परिणाम त्रेता व द्वापर में भुगते और कलियुग में भी भुगत रहे हैं, उनको यह कहने का बहाना न मिले कि हमें किसी ने जागृति में लाने का प्रयास ही नहीं किया अन्यथा हम सुधर जाते। ऐसे धर्म-विमुख मानवों को ही सीधे रास्ते पर लाने का पराक्रम कुदरत ने सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के माध्यम से समुचित ढँग से कर दिखलाया। यहाँ जानो कि कुदरत ही हमारी, आपकी, सबकी बनत बनाने वाली महान शक्ति है। इस शक्ति के प्रयोग द्वारा ही हमने जानना है कि हमारे आत्म-स्वरूप का यथार्थ क्या है?

आपकी जानकारी हेतु इस यज्ञ पर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार हर पहलू से सबको यह समझाने का यत्न किया जाएगा ताकि सब ब्रह्म को जान सकें और शब्द ब्रह्म को धारणकर व मन को उसमें लीन रखते हुए इस ब्रह्ममय संसार में ब्रह्मभाव अनुकूल निष्पाप विचरने के काबिल बन सकें। सजनों यज्ञ पर यह सारी बात क्रमवार होनी है। यदि कोई एक बार थोड़े समय के लिए भी सत्संग में अनुपस्थित रहा या लेट हो गया तो वह पूर्णतया कुदरत के सत्य को नहीं जान पाएगा। आशय यह है कि इस विषय पर कड़ी से

कड़ी जुड़ी हुई होगी और यदि लापरवाही वश आप किसी भी समय के सत्संग में अनुपस्थित रहे तो कुदरत के सत्य को नहीं जान पाओगे।

इस सन्दर्भ में एक बात और याद रखना कि यहाँ आकर किसी ने घरेलू बातें नहीं करनी अपितु यहाँ आकर सबने अज्ञानमय अवस्था से उबरकर ज्ञानमय अवस्था में आने के प्रति जाग्रत रहना है। सजनों यदि आपने ऐसा नहीं करना तो स्पष्ट कह रहे हैं कि यहाँ मत आना क्योंकि इस स्थिति में आपका आना, न आना एक बराबर होगा। इसके विपरीत यदि जानना चाहते हो कि ब्रह्म क्या है, ब्रह्मसत्ता क्या है, ब्रह्मसत्ता को धारण कैसे करना है और ब्रह्मसत्ता को धारण करने पर ब्रह्मशक्ति का जागरण कैसे होता है, तो फिर यज्ञ पर अवश्य आना। जानो इस सारी बात को सुनने-समझने पर ही परमेश्वर के सुपुत्र बन अपने जगतीय कर्त्तव्यों को निष्ठापूर्वक समयबद्ध पूरा करने में कुशल हो सकोगे। फिर जीवन के किसी कदम पर कोई फुरना नहीं सताएगा और आप संकल्प-रहित अवस्था को प्राप्त हो जाओगे। इस तरह आप सत्य को धारणकर सतयुग में प्रवेश कर जाओगे और आप शारीरिक, मानसिक व आत्मिक रूप से पूरी तरह स्वस्थ हो जाओगे। तात्पर्य यह है कि यह अपने आप में तीनों तापों से मुक्त होकर आनन्दमय जीवन जीने के योग्य बनने की मंगलकारी बात होगी। अब चुनाव आपका है। हम इस सन्दर्भ में यही कहेंगे कि बोर्डों के कथन अनुसार कुरस्ते पड़े हुए सजनों को रास्ते पर लाओ और सोये हुए सजनों को जगाओ क्योंकि मानव धर्म यही कहता है। इसी मानव धर्म का निर्वहन करने पर अक्षय यश-कीर्ति को प्राप्त कर सकोगे। इस हेतु फिर कह रहे हैं कि सजनों सुकर्म करो और शास्त्र अनुसारः-

धर्म मत हारना रे, धर्म मत हारना रे

धर्म के ऊपर सजनों तन-मन-धन सब वारना रे

यहाँ याद रखना कि यदि सपरिवार व औरों को सत्संग में लाने में सफल हुए तो ही धर्मज्ञ कहलाओगे अन्यथा धर्म से हार जाओगे। धर्मज्ञ बने तो फिर जीत, जीत, सदा ही जीत। सो सब विजयी होना। अब सब ध्यान से सुनोः-

प्रेम रस

प्रेम रस पी लै, पी लै

आनन्द नाल जी लै, जी लै
प्रेम रस पी लै, पी लै।

जेहड़ा वी प्रेम रस पीना चाहवे
उमड़-उमड़ के, उमड़ के, चैत्र दे यज्ञ ते आवे
प्रेम रस पी लै, पी लै।

जेहड़ा परिवारां नूं नाल ल्यावे
ओही ओन्हां दा सजन कहावे
प्रेम रस पी लै, पी लै।

प्रेम रस दा मोल न तोल
सजनों ए तां है अनमोल
प्रेम रस पी लै, पी लै।

प्रेम रस नाल मन होवे शांत
मिटें सब फुरने ते संताप
प्रेम रस पी लै, पी लै।
प्रेम रस पींदया प्रसन्नता आवे
हंगता-ममता सारी मिट जावे

प्रेम रस पी लै, पी लै।

प्रेम रस पीवे बने संतोषी

ओदे सारे सजन, कोई न विरोधी

प्रेम रस पी लै, पी लै।

प्रेम रस दे अधिकारी बनन लई

समभाव-समदृष्टि ते चलना ज़रूरी

प्रेम रस पी लै, पी लै।

प्रेम रस है औषधि अमृत्व दी, कोई विरला पराक्रमी ख़ुशनसीब ही पीवे।

जेहड़ा प्रेम रस नाल ख़ुद नूं सींचे ,उस सजन दी ही बुद्धि विवेकशील होवे।।

बुद्धि विवेक होंदिया ही, सत्य-धर्म दी राह ते प्रशस्त होवे।

फिर उस सजन लई, निष्कामता नाल पर उपकार करना सुगम होवे।।

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय विजय विजय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय विजय विजय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय विजय विजय

सजनों ईश्वर कहते हैं कि

असां आप करांगे यज्ञ,

असां आप हां सर्वज्ञ

सो बोलो

यज्ञ रचावन वाले श्री साजन जी की जय

यज्ञ रचावन वाले श्री साजन जी की जय

यज्ञ रचावन वाले श्री साजन जी की जय

आप सब सपरिवार यज्ञ पर खुशी-खुशी आओ, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।

सभी सजनों को जय सीता राम जी।